आचार्य उग्रादित्य

जीवन-परिचय : आयुर्वेद के विशेषज्ञ, आचार्य उग्रादित्याचार्य ने अपना विशेष परिचय नहीं लिखा है, किन्तु अपने गुरु का नाम श्रीनन्दि, ग्रन्थ-निर्माण-स्थान रामगिरि पर्वत बताया है। रामगिरि पर्वत बेंगी में स्थित था। नागपुर से 24 मील दूर उत्तर में विद्यमान रामटेक को रामगिरि पर्वत माना गया है।

आचार्य उग्रादित्य ने अपने ग्रन्थ में दशरथ गुरु का भी उल्लेख किया है, जो आचार्य वीरसेन के शिष्य थे। इससे आचार्य उग्रादित्य का समय 9वीं शताब्दी का अन्तिम चरण माना जाता है।

रचना-परिचय : आचार्य उगग्रादित्य की एक ही रचना प्राप्त है।

1. कल्याणकारक : कल्याणकारक एक बृहदकाय ग्रन्थ है। राजा नृपतुंग अमोघवर्ष प्रथम की राज्यसभा में औषधि में मांस सेवन का निराकरण करने के लिए इस ग्रन्थ की रचना की थी। इस ग्रन्थ में पच्चीस अधिकार हैं और श्लोकसंख्या पाँच हजार है। यह आयुर्वेद का उत्तम ग्रन्थ है। यह सोलापुर से प्रकाशित है।